How to Cite:

Balaji Naik.L **(2008). डॉ.शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**
International Journal of Economic Perspectives,21), 26-32.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

डॉ.शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव

Balaji Naik.L
Research Scholar, Departmentof Hindi, Bangalore University, Bangalore- 560056

भू मका

डॉ. शिवमंगल सुमन की कविता पर अरविन्द दर्शन के विभिन्न तत्वों का प्रांजल प्रभाव पड़ा है । आत्मतत्व, आत्मा–परमात्मा से मिलन, आत्मा और परमात्मा की अभिन्नता, संसार के कण–कण में व्यक्त परम प्रिय की छवी, परमात्मा की कृपा से आत्मा का उद्धार आदि अरविन्द दर्शन के विभिन्न तत्वों का स्पष्ट प्रभाव कवि डॉ. सुमन की कविताओं पर दृग्गोचर होता है । प्रमुखतःडॉ. शिवमंगल सुमन की साठोत्तरी कविताओं पर अरविन्द दर्शन का अधिक प्रभाव पडा है । इनकी विभिन्न कविताओं पर परिलक्षित अरविन्द दर्शन के प्रभाव का अनुसंधानात्मक विश्लेषण यहाँ किया जा रहा है ।

मानवीय संवेदना से समंचित दार्शनिक चेतना

'मिट्टी की बारात' शीर्षक कविता में कमला एवं जवहरलाल नेहरू के संभाषण के द्वारा कवि डॉ.सुमन यह सिद्ध करते हैं कि मानवीय संवेदना से युक्त दार्शनिक चेतना वसुंधरा को महान बनाती है । कमला के प्रति जवहर के हृदय में मानवीय संवेदना से युक्त आध्यात्मिक प्रेम–भावना निहित है । मानवीय प्रेम भावना से युक्त अश्रु कण धरती को स्वर्ग बनाते हैं । इन अश्रु कणों से धरती वसुंधरा एवं विश्वंभरा बन कर, स्वर्ग से भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है । डॉ. सुमनजी स्पष्टतः यह भाव ध्वनित करते हैं कि मानवीय संवेदना वसुंधरा में आध्यात्मिक चिंतन संपत्ति भर देती है । जवाहर कहते है कि –

© 2008 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Balaji Naik.L
Submitted: 18 October 2008, Revised: 09 November 2008, Accepted: 27 December 2008

How to Cite:
Balaji Naik.L **(2008). डॉ.शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**
International Journal of Economic Perspectives,21), 26-32.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

धरती का सबसे अनमोल

वही मोती है

मानवीय मार्मिक

संवेदना की धरोहर

स्वर्गलोक में अलभ्य

धन्य है इसी से धरा

विश्वम्भरा ।[१]

इन पंक्तियों मे मानवीय तत्व से संमचित आध्यात्मिक चेतना की गरिमा निरूपित है ।

परम की कृपा से आत्माओं का मिलन

'मिट्टी की बारात'कविता में कमला–नेहरू के जीवन के अंतिम क्षणों में जवाहर उनसे मिलते हैं । अंतिम योग के पहले उनका जीवन संयोग का आनंदोद्यान बन जाता है । इस संयोग को वे परमसत्ता की कृपा मानते हैं । परमात्मा की कृपा से पुलकित दोनों की आत्माएँ आनंद नृत्य करने लगती है । यह अंतिम संयोग 'मिट्टी की बारात' है । दोनों कहते हैं कि यह जीवन–प्रवाह धन्य, इसने पुनः हम दोनों को मिला दिया है । मिट्टी कभी नहीं मिटती है, आज मृत्युने हमें अमरता का अमृत पिला दिया है –

धन्य है, धन्य है, जीवन–प्रवाह यह

जिसने हम दोनों को फिर से मिला दिया

मिट्टी कभी मिटती नहीं, मिट्टी कभी मिटती नहीं

मृत्यु ने अमरता का प्याला पिला दिया ।[२]

© 2008 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Balaji Naik.L
Submitted: 18 October 2008, Revised: 09 November 2008, Accepted: 27 December 2008

How to Cite:
Balaji Naik.L **(2008). डॉ.शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**
International Journal of Economic Perspectives,21), 26-32.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

दोनों आत्माएँ इस शाश्वत सत्य को मानती है कि मृत्यु अभिशाप नहीं बल्कि वरदान है । आध्यात्मिक चिंतन के अनुसार मृत्यु परमात्मा की इच्छा से संघटित होती है । आत्मा भगवान में लीन हो जाती है । यह मुक्ति का प्रतीक है । अंतिम वियोग और अंतिम संयोग का अत्यंत सुन्दर आध्यात्मिक विवेचन इस कविता में किया गया है ।

शाश्वत सत्य का उद्‌घाटन

'नयी सृष्टि का संवत्सर' कविता पर अरविन्द दर्शन का प्रांजल प्रभाव पडा है । अरविन्द सत्य के समुद्‌घाटन को अपने दर्शन में प्रमुख स्थान दिया है । सत्य को ही वे परमसत्ता मानते हैं । सत्य की छवि के रूप में परम-छवि अगजग में छायी हुई है । परमात्मा की इच्छा सत्य के रूप में समुद्‌घाटित होती है । अरविन्द दर्शन के इस तत्व से प्रभावित कवि डॉ.सुमन कहते हैं कि –

उद्‌घाटित हुआ सत्य सहसा
व्यापक विराट की समता में
सबसे सुन्दर सबसे मोहक
लगती अपनी ही वसुन्धरा । [३]

इस कविता में अरविन्द दर्शन से प्रभावित शिवमंगल सुमनजी स्पष्टतः कहते हैं कि व्यापका विराट सत्ता सर्वत्र सत्य के रूप में प्रकट होती है और इस सत्य की छवी के कारण ही वसुन्धरा सबसे सुन्दर और मोहक लगती है ।

आत्म–शुद्धि

दर्शन प्रधानतः आत्म शुद्धि के लिए है । इस आत्म–शुद्धि के बिना आत्मा, परमात्मा का सानिद्य पा नहीं सकती । अतः अरविन्द ने अपने दर्शन में आत्म शुद्धि तत्व को महत्वपूर्ण

© 2008 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Balaji Naik.L
Submitted: 18 October 2008, Revised: 09 November 2008, Accepted: 27 December 2008

How to Cite:
Balaji Naik.L **(2008). डॉ.शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**
International Journal of Economic Perspectives,21), 26-32.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

स्थान दिया है । इस तत्व से प्रभावित डॉ.सुमन जी 'अनस्तित्व'' शीर्षीक कविता में कहते हैं कि –

कबीर की चदरिया–सी

झीनी–बीनी एक लहर

तने दिग्दिगन्तों में

पानीदारमुखडों पर

अंबर ही अंबर हो । [४]

संपूर्ण कविता में दार्शनिक चेतना संव्याप्त है । शिवमंगल सुमन जी आत्म शुद्धि को सक्षम अभिव्यक्ति प्रदान करने हेतु कबीर की चदरिया का उल्लेख किया है । कबीर ने चदरियों का प्रयोग शरीर के लिए किया है । शरीर रूपी चादरिया भगवान ने प्रदान किया है । उसे बहुत से लोगो ने गंधा कर लिया है, जबकि कबीर ने उसे शुद्ध रखा है । वे कहते हैं कि कबीर की चादरियों की तरह हम भी अपनी आत्मा रूपी चादरिया को शुद्ध रखें । शुद्ध की लहर सर्वत्र व्याप्त होती है । अंबर शब्द का यहाँ विशेष प्रयोग किया गया है । अंबर का अर्थ वस्त्र है और साथ ही साथ आकाशा भी है । यह शुद्धता का भी प्रतीक है ।

अध्यात्मिक आस्था

अरविन्द 'दर्शन' को मानवीय रूप प्रदान करते हैं । दर्शन का संबंध आत्मा एवं परमात्मा के साथ है । अरविन्द के अनुसार दार्शनिक चेतना से अनुप्राणित आत्मा आस्था का सन्निधान बनती है । अरविन्द दर्शन के आध्यात्मिक आस्था तत्व से प्रभावित डॉ.सुमन जी 'युग–

© 2008 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Balaji Naik.L
Submitted: 18 October 2008, Revised: 09 November 2008, Accepted: 27 December 2008

How to Cite:
Balaji Naik.L **(2008). डॉ.शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**
International Journal of Economic Perspectives,21), 26-32.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

पुरुष'' शीर्षक कविता में दार्शनिक चेतना से अनुप्राणित मानवीय आस्था का वर्णन करते हुए कहते है कि –

अनगिनत निरीहों की आशा
मूकों की भाषा बन आए
मानवता की खोई आस्था
लौटा लाए ।[५]

आध्यात्मिक आस्था से मानव की महत्ता बढ़ती है क्योंकिसंसार के समस्त तत्वों का लक्ष्य मानव ही है । दर्शन का भी लक्ष्य आत्मा का उत्थान है । आत्मा विभिन्न दिशाएँ पार कर अंत में परमात्मा में लीन हो जाती है । कवि चाहते हैं कि इस आध्यात्मिक चेतना के प्रभाव से मानव की खोई हुई आस्था लौटकर आए ।

दर्शन में समन्वय भावना

आधुनिक विचार धाराओं में समन्वय चेतना को प्रमुख स्थान मिला है । अरविन्द दर्शन में भी यह चेतना विद्यमान है । अरविन्द ने अपने दर्शन में कबीर, नानक, दादू, नामदेव आदि के तात्विक विचारों को स्थान देकर समन्वय चेतना का रूपायन किया है । अरविन्द दर्शन के समन्वय चेतना संपन्न दार्शनिक तत्व से प्राभावित कवि सुमन कहते हैं कि –

नामदेव, नानक, दादू
कबीर, तुकाराम
अविराम रटते रहे
ईश्वर–अल्ला एक नाम ।[६]

© 2008 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Balaji Naik.L
Submitted: 18 October 2008, Revised: 09 November 2008, Accepted: 27 December 2008

How to Cite:
Balaji Naik.L **(2008). डॉ.शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**
International Journal of Economic Perspectives,21), 26-32.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

कबीर, तुकाराम, नामदेव, दादु, नानक ये लोग सदा कहते रहें कि ईश्वर–अल्ला एक ही है । नाम अलग है, पर अर्थ एक ही है । सर्वेश्वर संसार में एक ही है । वे सारे संसार के दाता और त्राता है । इस समन्वय भावना से ईश्वरीय आस्था उत्पन्न होती है । इस दार्शनिक आस्था में इतनी शक्ति है कि वह संसार के विभिन्न वर्गों को एक बना सकती है ।

निष्कर्ष

'मिट्टी की बारात' में संकलित कविताओं पर अरविन्द दर्शन के प्रभाव निरूपण करते हुए यह तथ्य प्रकाश में लाया गया है कि अरविन्द दर्शन के विभिन्न तत्वों के धरातल पर डॉ.सुमन ने आत्मा परमात्मा का संबंध, आत्मा का उत्थान,शाश्वत सय का समुद्घाटन, आत्म–शुद्धि, परमसत्ता के प्रति आत्मा का आकर्षण, विभिन्न भारतीय दार्शनिकों के विचारों की महत्ता, समन्वय भावना, आत्म–परमात्मा का मिलन, आध्यात्मिक आस्था आदि का जो विवेचन किया गया है, उनका अनुसंधानात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है ।

यह निरूपित किया गय है कि 'मिट्टीकी बारात' कविता में आध्यात्मिक गरिमा से समंचित दार्शनिक चेतना पर अरविन्द दर्शन का स्पष्ट प्रभाव दृग्गोचर होता है । महर्षी अरविन्द के दर्शन से प्रभावित कवि डॉ.सुमन ने अपने गहन दार्शनिक विचारों के विश्लेषण में कबीर, नानक, दादू, तुकाराम आदि दार्शनिकों के महान विचारों को सक्षम अभिव्यक्ति प्रदान की है। अरविन्द दर्शन में धार्मिक एकता को स्थान मिला है । धार्मिक एकता तत्व एवं समन्वय तत्व से प्रभावित डॉ.सुमन जी धर्म निरपेक्ष दार्शनिक चेतना प्रदर्शित करते हैं । श्री अरविन्द सत्य को ही परमसत्ता का स्वरूप मानते हैं। इसलिए उनका दर्शन सत्य दर्शन कहलाता है । इस सत्य दर्शन से प्रभावित डा.सुमन सत्य की उपासना में परम की उपासना देखते हैं ।

© 2008 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Balaji Naik.L
Submitted: 18 October 2008, Revised: 09 November 2008, Accepted: 27 December 2008

How to Cite:

Balaji Naik.L **(2008). डॉ.शिवमंगल सिंह सुमन के काव्य पर अरविन्द दर्शन का प्रभाव**
International Journal of Economic Perspectives,21), 26-32.
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal/article

संदर्भ सूची

1. मिट्टीकी बारात – शिवमंगल सिंह 'सुमन', पृ. ४०&४९.
2. मिट्टीकी बारात – शिवमंगल सिंह 'सुमन', पृ. ४४.
3. नयी सृष्टि का संवत्सर (मिट्टीकी बारात) – शिवमंगल सिंह 'सुमन', पृ. ४४.
4. अनस्तित्व (मिट्टीकी बारात)– शिवमंगल सिंह 'सुमन', पृ. ५७ & ५८.
5. युग–पुरुष (मिट्टीकी बारात)– शिवमंगल सिंह 'सुमन', पृ. ८४.
6. गांधी शताब्दी (मिट्टीकी बारात)– शिवमंगल सिंह 'सुमन', पृ. ८६.

*****

© 2008 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: Balaji Naik.L
Submitted: 18 October 2008, Revised: 09 November 2008, Accepted: 27 December 2008